Dr Karuna Roy
Associate Professor
Department of Hindi
S.G.G.S. College
Patna City
e-mail- karuna—1812
@yahoo.co.in

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष
पत्र – 4
(हिन्दी साहित्य का इतिहास)
इकाई – 3 – आधुनिक काल की पृष्ठभूमि

प्रयोगवाद

'प्रयोग' शब्द का सामा अर्थ है अन्वेषण करना, खोज करना। साहित्य के क्षे में इस शब्द का विशिष्ट अर्थ है। हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद कविता की वह परंपरा है जो भाषा, भाव और शिल्प के स्तर पर निरंतर प्रयोग करते रहने पर बल देती है। जैसे, आप लोगों ने सुंदर मुखड़े की उपमा चंद्रमा से देने की परंपरा से परिचित हैं। प्रयोगवादियों ने यह माना कि सारे उपमान अत्यधिक प्रयोग के कारण घिस गये हैं और मैले भी हो गये हैं। कवियों का विद्रोह व्यक्त करते हुए अजित कुमार प्रश्न करते हैं — इस उदाहरण में सुंदर मुखड़े को चाँद जैसा न बताकर रुपये जैसा बताया गया है –

'चांदनी चंदन सदृश'
हम क्यों लिखें ?
मुख हमें कमलों सरीखे
क्यों दिखें ?
हम लिखेंगे :
चांदनी उस रुपये–सी है
कि जिसमें
चमक है, पर खनक गायब है।' – वे परंपरागत उपमान को नकारते हैं।

यह विद्रोह उस श्रेण्य (classic) कविता के विरुद्ध है जिसमें महाकवि तुलसीदास लिखते हैं — 'नवकंज लोचन, कंज मुख, करकंज, पद कंजारुणं' अर्थात (श्रीराम की) आँखें नये कमल के समान हैं, मुख कमल सा है, हाथ (कर) कमल की तरह कोमल हैं और पैर (का तलवा) कमल की भाँति लाल हैं।' इस काव्य विध से आधुनिक कवि ऊब गये थे। उन्होंने नवीन उपमान खोजे, नये शब्दों का आविष्क किया और अभिव्यक्ति के नये तरीके ढूंढे। व्यक्तिवाद से प्रेरित इस काव्य प्रवृत्ति का नाम प्रयोगवाद है। इसका काल 1943 ई० से 1953 ई० तक माना जाता है। यह काव्यधारा सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के नेतृत्व में प्रवाहित हुई। उन्होंने 1943 ई० में 'तारसप्तक' काव्य संग्रह का सम्पादन किया। उसमें सात कवियों की रचनाएँ प्रकाशित हुईं। उनके नाम इस प्रकार हैं – सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', 'गजानन माधव 'मुक्तिबोध', गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, नेमिचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल एवं रामविलास शर्मा। इन सात कवियों ने मार्क्सवादी विचारधारा की नीरस उपदेशात्मकता से कविता को मुक्त कराने के लि

प्रयोगवाद के रूप में एक सामूहिक प्रयास किया था। प्रयोगों के प्रति आकर्षण और तदनुरूप नये मार्गों की अन्वेषण सभी प्रयोगवादी कवियों का लक्ष्य रहा है। 'तारसप्तक' के प्रकाशन के बाद अनेक प्रयोगशील कविताएँ प्रकाश में आने लगी। अज्ञेय का काव्य-संग्रह 'इत्यलम्' और 'हरी घास पर क्षण भर' गिरिजाकुमार माथुर का 'नाश और निर्माण', त्रिलोचन की काव्यकृति 'धरती', केदारनाथ अग्रवाल की 'युग की गंगा' सामने आयी।

दूसरा 'तारसप्तक' सन् 1951 में प्रकाशित हुआ। इसमें भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्त माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय एवं धर्मवीर भारती की कविताएँ संकलित थीं। इस सप्तक में आत्मान्वेषण पर बल दिया गया था। अज्ञेय के ही सम्पादन में तीसरा 'तारसप्तक' 1959 ई० में प्रकाशित हुआ, जिसकी कविताओं में सौन्दर्यवादी प्रवृत्ति के साथ-साथ युग-सत्य की भी निश्छल अभिव्यक्ति मिलती है। इसके अंतर्गत प्रयागनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही एवं सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की रचनाएँ संकलित हैं। तीसरा 'तारसप्तक' के प्रकाशन के बीस वर्षों बाद अज्ञेय ने सन् 1979 ई० में चौथा 'तारसप्तक' भी प्रकाशित किया। इसमें अवधेश कुमार, राजकुमार कुम्भज, स्वदेश भारती, नन्दकिशोर आचार्य, सुमन राजे, श्रीराम वर्मा, राजेन्द्र कुमार की रचनाएँ संकलित हैं।

प्रयोगवादी कविता समसामयिक जीवन की अभिव्यक्ति है। समसामयिक वस्तुओं और क्रिया कलापों से इन कवियों ने उपमान तथा बिम्बों का चयन किया है। व्यक्तिवाद एवं उसकी चरम परिणति, अहंवाद, प्रयोगवादी कविता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है। परम्परागत मूल्यों का तिरस्कार करते हुए प्रयोगवादी कवि जीवन-आदर्शों के प्रति अनास्था का भाव प्रकट करते हैं। सामाजिक तथा आर्थिक वैषम्य के कारण प्रयोगवादी कवि कुण्ठा एवं वेदना से ग्रस्त दिखाई पड़ते हैं।

प्रयोगवादी कवि यथार्थ के स्तर पर जीते हैं। इनकी कविताएँ ~~प्रायः~~ फ्रायड तथा युंग जैसे मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों से विशेष प्रभावित हैं। अतः दमित काम-वासनाओं का चित्रण, संवेदनाओं के प्रकृत रूप का वर्णन प्रयोगवादी कविता की विशेष प्रवृत्ति है। अति बौद्धिकता के बोझ से प्रयोगवादी कवियों की भावुकता दब-सी गयी है। बौद्धिकता के कारण ही कविता में अत्यधिक दुरूहता एवं जटिलता आ गयी है। साधारण पाठक तो इन कविताओं का अर्थ भी नहीं समझ पाता। भाषा शैली के

के क्षेत्र में भी प्रयोगवादी कवियों में नवीन प्रयोगों के प्रति मोह दिखाई देता है। भाषा में स्वच्छंदता एवं शैली की कृत्रिमता में अनुभूति दब-गयी-सी प्रतीत होती है। इस वाद ने कविता के बँधी-बँधायी पद्धति के घेरे से निकाला है, सीमित जीवनानुभूतियों के अभिव्यंजन से काव्य के मूल्यांकन को एक नई दिशा दी है और बृहत् मानव के जीवन पर आम आदमी की महत्ता प्रतिपादित की है। इस संबंध में अज्ञेय ने लिखा है - "प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किया है.... किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही है। किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुए हैं उनसे आगे बढ़कर अब उन क्षेत्रों का अन्वेषण होना चाहिए जिन्हें कभी नहीं छुआ गया है या जिनको अभेद्य मान लिया गया है।"

इस तरह प्रयोगवाद के उन्नायक कवि कविता के लिए विस्तृत संसार की तलाश में नवीन प्रयोगों की ओर झुकते नजर आते हैं। यहाँ तक कि वह परंपराओं को नकारने पर भी तुला हुआ है। बाल्मीकि कवि ने क्रौंच वध पर भावुक उद्गार व्यक्त किये थे। ऐसा उन्होंने क्रौंच पक्षी के विलाप से द्रवित होकर किया था। किन्तु अज्ञेय ऐसा नहीं मानते —

'क्रौंच बैठा हो कभी वल्मीक पर (वल्मीक - दीमकों का घर)
तो मत समझो —
वह अनुष्टुप बाँचता है संगिनी के स्मरण के —
जान ले वह दीमकों की टोह में है।'

इस तरह प्रयोगवाद की कुछ विशेषतायें उभर कर सामने आती हैं जो इस प्रकार हैं —

(1) व्यक्ति के अहं का उद्घोष — प्रयोगवादी कवियों ने वैयक्तिक क्षोभ, कुंठा, झुंझलाहट आदि को अपनी कविता का केन्द्रबिंदु बनाया है।

(2) यथार्थवाद - प्रयोगवादी कवि यथार्थ का चित्रण करने में यकीन करते हैं। यहाँ तक कि वे इस क्रम में - अश्लीलता, भदेशपन और विकृति का चित्रण करने से भी परहेज नहीं करते।

(3) बौद्धिकता का अतिरेक - प्रयोगवादी कवि सामान्य जन से काफी अधिक बुद्धिमान है। वह अपनी कविता को बौद्धिकता से बोझिल बना देता है। इस कारण उनकी कवितायें शुष्क और नीरस हो गई हैं।

उपमानों की नवीनता - यह प्रयोगवादी कवियों की सबसे बड़ी खोज है। इन कवियों ने 'बाजरे की कलगी' का सौंदर्य देखा है, सपनों को भुने हुए पापड़ की तरह टूटते देखा है।

निराशावादी काव्य - प्रयोगवादी कवि समाज, सत्ता और परिवेश से नाखुश रहते हैं। उसे अपने व्यक्तित्व के विकास में बाधक मानते हैं। इसी कुंठा की झलक उनकी कविताओं में निराशा ~~झलकती है~~। के रूप में सामने आती है।

सामान्य विषयों को महत्व - प्रयोग को कविता का लक्ष्य मान लेने वाले कवि सामान्य विषयों को महत्व देने लगते हैं। कविता के अंदर चाय की प्याली से लेकर गरम पकौड़ा, ठंडा बीयर, चूड़ी का टुकड़ा, सब कुछ समाहित है। यहाँ तक कि नायिका के ~~होठ~~ होठ, लाल, गुलाबी, काले या नीले न होकर फिरोजी रंग के भी हो सकते हैं।

प्रयोगवादी कवि विराट मानव की कल्पना से परे हटकर 'लघु मानव' को अपने काव्य में प्रतिष्ठित करता है।

छंद और अलंकार में नवीनता - प्रयोगवादी कवियों ने अलंकारों के लिये नवीन उपमान चुने यह तो पहले ही बताया जा चुका है। उन्होंने छंदों में मुक्त छंद का ही उपयोग किया। नये बिंबों और प्रतीकों का भी इन कवियों ने अपनी कविता में उपयोग किया।

प्रयोगवाद के ही भीतर 'प्रपद्यवाद' या 'नकेनवाद' भी पनपा जिसे बिहार के तीन कवियों - नलिन विलोचन शर्मा, केसरीकुमार और 'नरेश' ने प्रचलित किया। इनके नामों के प्रथम अक्षर से बने शब्द 'नकेन' को आलोचकों ने 'नकेनवाद' का नाम दिया और उसका उपहास भी किया। प्रपद्यवाद के कवियों ने उसे 'प्रयोग का दर्शन' माना 'प्रयोगवादी पद्य' को 'प्रपद्य' नाम देकर इन कवियों ने कुछ समय तक हिंदी साहित्य को चौंकाया पर कोई स्थायी स्थान बनाने में वे असफल रहे।

इस तरह आपने देखा कि प्रयोगवाद में नये मार्गों का अन्वेषण किया गया तथा शिल्प और विषय दोनों को नवीनता देने की चेष्टा की गयी। इस वाद के कवियों ने मुख्यत: प्राचीन काव्यधारा की परंपरा - छंद, भाव, विषय और भाषा आदि का विरोध किया। यह वाद विदेशी कवियों के एक्सपेरीमेंटलिज्म की छाया बनकर रह गया।

[signature]
Mobile No. 9431881251